टिप्पणी

15

अंधेर नगरी

अब तक के पाठों में आप साहित्य की अनेक विधाओं के विषय में जान चुके हैं, जैसे— कहानी, कविता, रेखाचित्र, रिपोर्ताज़ आदि। आइए, अब एक नाटक पढ़ते हैं।

सुबह सूरज निकलता है, पक्षी चहचहाते हैं, धीरे-धीरे अंधकार दूर होता है और प्रकाश फैलता है। मनुष्य-समाज भी सक्रिय हो उठता है जिस प्रकार प्रकृति की एक व्यवस्था है, वैसे ही मनुष्य ने भी एक व्यवस्था बनाई है, जिससे उसके सारे कार्य सुचारू रूप से हो सकें। कल्पना कीजिए, यदि प्रातः काल सूरज न निकले, पक्षी न चहचहाएँ, नदियाँ उलटी दिशा में बहने लगें, तो? और यदि मनुष्य-समाज में भी कोई व्यवस्था न रहे, चारों तरफ अराजकता हो, कुछ स्वार्थी लोग ही देश को चलाने लगें, वे जनता को अपना न समझें, उन्हें देश की जनता की दशा का ज्ञान ही न हो, तो? आइए, इस पाठ के माध्यम से इन बातों को समझने का प्रयास करें।

उद्देश्य

इस नाटक को पढ़ने के बाद आप–

- नाटक में चित्रित शासन-व्यवस्था का आज के संदर्भ में वर्णन कर सकेंगे;
- राजा-प्रजा के पारस्परिक संबंधों का विश्लेषण कर सकेंगे;
- न्यायपूर्ण व्यवस्था के बारे में अपने विचार प्रस्तुत कर सकेंगे;
- नाटक में निहित व्यंग्य को समझकर उसका उल्लेख कर सकेंगे;
- लोक-संस्कृति और लोक-भाषा के कुछ प्रमुख पक्षों की व्याख्या कर सकेंगे;
- एक विधा के रूप में 'नाटक' की प्रमुख विशेषताएँ बता सकेंगे।

15.1 मूल पाठ

आइए, इस नाटक को एक बार ध्यान से पढ़ लेते हैं।

टिप्पणी

अंधेर नगरी

पहला दृश्य

बाह्य प्रांत

(महंत जी दो चेलों के साथ गाते हुए आते हैं)

महंत—बच्चा नारायणदास! यह नगर तो दूर से बड़ा सुंदर दिखाई पड़ता है! देख, कुछ भिच्छा-उच्छा मिले, तो ठाकुर जी को भोग लगै। और क्या!

नारायणदास—गुरु जी महाराज! नगर तो नारायण के आसरे से बहुत ही सुंदर है, जो है सो, पर भिच्छा सुंदर मिलै, तो बड़ा आनंद होय।

महंत—बच्चा गोबरधनदास! तू पच्छिम की ओर जा और नारायणदास पूरब की ओर जाएगा। देख जो कुछ सीधा-सामग्री मिले, तो श्री शालिग्राम जी का बालभोग सिद्ध हो।

गोबरधनदास—गुरु जी! मैं बहुत-सी भिच्छा लाता हूँ। यहाँ के लोग तो बड़े मालदार दिखाई पड़ते हैं। आप कुछ चिंता मत कीजिए।

महंत—बच्चा, बहुत लोभ मत करना। देखना, हाँ—

लोभ पाप को मूल है, लोभ मिटावत मान।
लोभ कभी नहिं कीजिए, या में नरक निदान।

(गाते हुए सब जाते हैं)

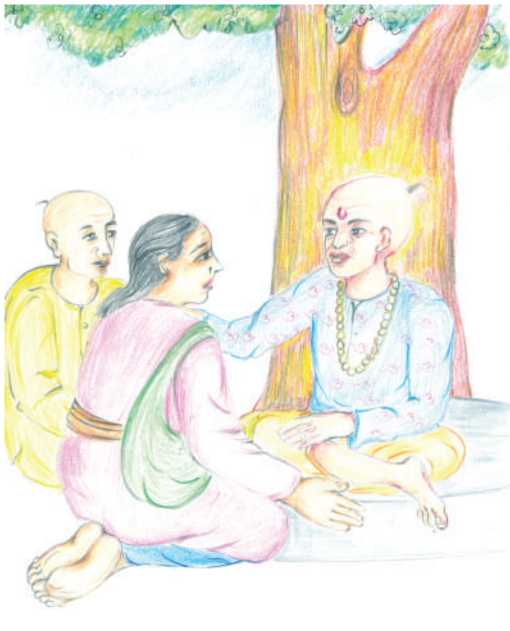

चित्र 15.1

शब्दार्थ

भिच्छा – भिक्षा, भीख
भोग – भगवान को अर्पित किया जाने वाला भोजन
शालिग्राम – काले रंग का छोटा गोल पत्थर, जिसे विष्णु मानकर पूजा जाता है।
लोभ – लालच
निदान – परिणाम
हाकिम – अफ़सर
टिकस – टैक्स, कर
मूल – जड़
सेर – एक पुरानी तोल (आज के लगभग 800 ग्राम के बराबर)
सीधा – बाह्मणों को दी जाने वाली कच्ची खाद्य-सामग्री
टका – दो पैसे का सिक्का
मिटावत – मिटाता है
मान – मर्यादा, प्रतिष्ठा, सम्मान
या मैं – इसमें

दूसरा दृश्य

स्थान—बाज़ार

घासीराम—चना जोर गरम—

चने बनावैं घासीराम। जिनकी झोली में दूकान।।
चना चुरमुर-चुरमुर बोलै। बाबू खाने को मुँह खोलें।।
चना खायँ गफूरन, मुन्ना। बोलैं और नहीं कुछ सुन्ना।।
चना हाकिम सब जो खाते। सब पर दूना टिकस लगाते।।
चना जोर गरम—टके सेर।

हलवाई—जलेबियाँ गरमागरम। घी में गरक, चीनी में तरातर, चासनी में चभाचभ। ले भूर का लड्डू। जो खाय सो भी पछताय, जो न खाय सो भी पछताय। रेवड़ी कड़ाका। पापड़ पड़ाका। ऐसी जात हलवाई, जिसके छत्तिस कौम हैं भाई। सब सामान ताजा। खाजा ले खाजा। टके सेर खाजा।

पाचकवाला—

मेरा चूरन जो कोई खाय। मुझको छोड़ कहीं नहिं जाय।।
चूरन जब से हिंद में आया। इसका धन बल सभी घटाया।।
चूरन अमले सब जो खावैं। दूनी रिश्वत तुरत पचावैं।।
चूरन सभी महाजन खाते। जिससे जमा हजम कर जाते।।
चूरन खाते लाला लोग। जिनको अकिल अजीरन रोग।।
चूरन खावै एडिटर जात। जिनके पेट पचै नहिं बात।।
चूरन साहेब लोग जो खाता। सारा हिंद हजम कर जाता।।
चूरन पुलिस वाले खाते। सब कानून हजम कर जाते।।
ले चूरन का ढेर, बेचा टके सेर।

बनियाँ—आटा, दाल, लकड़ी, नमक, घी, चीनी, मसाला, चावल ले टके सेर।

(बाबा जी का चेला गोबरधनदास आता है और सब बेचने वालों की आवाज़ सुन-सुनकर खाने के आनंद में बड़ा प्रसन्न होता है।)

गोबरधनदास—क्यों भाई बनिए, आटा कितने सेर?

बनियाँ—टके सेर।

गोबरधनदास—और चावल?

बनियाँ—टके सेर।

गोबरधनदास—और चीनी?

बनियाँ—टके सेर।

गोबरधनदास—और घी?

बनियाँ—टके सेर।

गोबरधनदास—सब टके सेर! सचमुच?

बनियाँ—हाँ महाराज, क्या झूठ बोलूँगा?

गोबरधनदास—(कुँजड़िन के पास जाकर) क्यों माई, भाजी क्या भाव?

कुँजड़िन—बाबा जी टके सेर। निनुआ, मुरई, धनियाँ, मिरचा, साग—सब टके सेर।

गोबरधनदास—सब भाजी टके सेर! वाह-वाह! बड़ा आनंद है! यहाँ सभी चीज़ टके सेर। (हलवाई के पास जाकर) क्यों भाई हलवाई! मिठाई कितने सेर?

भूर – बेसन
खाजा – खजला (मैदे से बनी एक प्रकार की मिठाई)
अमला – कर्मचारी वर्ग
अकिल – अक्ल/समझ
अजीरन – अजीर्ण, अपच रोग
एडिटर – संपादक
कुँजड़िन – सब्जी बेचने वाली
मुरई – मूली
निनुआ – तोरी, तुरई

हलवाई—बाबा जी! लडुआ, जलेबी, गुलाबजामुन, खाजा सब टके सेर।

गोबरधनदास—वाह! वाह!! बड़ा आनंद है। क्यों बच्चा, मुझसे मसखरी तो नहीं करता? सचमुच सब टके सेर?

हलवाई—हाँ बाबा जी, सचमुच सब टके सेर। इस नगरी की चाल ही यही है। यहाँ सब चीज़ टके सेर बिकती है।

गोबरधनदास—क्यों बच्चा! इस नगरी का नाम क्या है?

हलवाई—अंधेर नगरी।

गोबरधनदास—और राजा का क्या नाम है?

हलवाई—चौपट्ट राजा।

गोबरधनदास—वाह! वाह! अंधेर नगरी, चौपट्ट राजा, टका सेर भाजी, टका सेर खाजा। (यही गाता है और आनंद से बगल बजाता है)

हलवाई—तो बाबा जी, कुछ लेना-देना हो, तो लो-दो।

गोबरधनदास—बच्चा, भिक्षा माँगकर सात पैसे लाया हूँ, साढ़े तीन सेर मिठाई दे दे, गुरु-चेले सब आनंदपूर्वक इतने में छक जाएँगे।

(हलवाई मिठाई तोलता है—बाबा जी मिठाई लेकर खाते हुए और अंधेर नगरी का गीत गाते हुए जाते हैं)

(पटाक्षेप)

मसखरी – मज़ाक
छक जाना – तृप्त हो जाना

तीसरा दृश्य

स्थान—जंगल

(महंत जी और नारायणदास एक ओर से 'राम भजो' इत्यादि गाते हुए आते हैं और दूसरी ओर से गोबरधनदास 'अंधेर नगरी' गाते हुए आते हैं)

महंत—बच्चा गोबरधनदास! कह, क्या भिक्षा लाया? गठरी तो भारी मालूम पड़ती है।

गोबरधनदास—बाबा जी महाराज! बड़ा माल लाया हूँ, साढ़े तीन सेर मिठाई है।

महंत—देखूँ बच्चा! (मिठाई की झोली अपने सामने रखकर खोलकर देखता है) वाह! वाह! बच्चा! इतनी मिठाई कहाँ से लाया? किस धर्मात्मा से भेंट हुई?

चित्र 15.2

गोबरधनदास—गुरु जी महाराज! सात पैसे भीख में मिले थे, उसी से इतनी मिठाई मोल ली है।

महंत—बच्चा! नारायणदास ने मुझसे कहा था कि यहाँ सब चीज़ टके सेर मिलती है, मैंने इसकी बात का विश्वास नहीं किया। बच्चा, यह कौन-सी नगरी है और इसका कौन राजा है, जहाँ टके सेर भाजी और टके सेर खाजा है?

गोबरधनदास—अंधेर नगरी, चौपट्ट राजा, टके सेर भाजी, टके सेर खाजा।

चित्र 15.3

महंत—तो बच्चा! ऐसी नगरी में रहना उचित नहीं है, जहाँ टके सेर भाजी और टके ही सेर खाजा हो। सो बच्चा चलो यहाँ से। ऐसी अंधेर नगरी में हज़ार मन मिठाई मुफ़्त की मिले, तो किस काम की? यहाँ एक छन नहीं रहना।

गोबरधनदास—गुरु जी, ऐसा तो संसार-भर में कोई देस ही नहीं है। दो पैसा पास रहने ही से मज़े में पेट भरता है। मैं तो इस नगरी को छोड़कर नहीं जाऊँगा। और जगह दिन-भर माँगो, तो भी पेट नहीं भरता। बाजे-बाजे दिन उपास करना पड़ता है। सो मैं तो यहीं रहूँगा।

महंत—देख बच्चा, पीछे पछताएगा।

गोबरधनदास—आपकी कृपा से कोई दुख न होगा, मैं तो यही कहता हूँ कि आप भी यहीं रहिए।

महंत—मैं तो इस नगरी में अब एक क्षण भी नहीं रहूँगा। देख मेरी बात मान, नहीं पीछे पछताएगा। मैं तो जाता हूँ। पर इतना कहे देता हूँ कि कभी संकट पड़े तो हमारा स्मरण करना।

गोबरधनदास—प्रणाम गुरु जी, मैं आपका नित्य ही स्मरण करूँगा। मैं तो फिर भी कहता हूँ कि आप भी यहीं रहिए।

(महंत जी नारायणदास के साथ जाते हैं, गोबरधनदास बैठकर मिठाई खाता है)

(पटाक्षेप)

चौथा दृश्य

स्थान—राजसभा

(राजा-मंत्री और नौकर लोग यथास्थान स्थित हैं)

टिप्पणी

छन – क्षण
बाजे-बाजे–किसी-किसी
उपास – उपवास, व्रत
स्मरण – याद

टिप्पणी

नौकर—(एक सुराही में से एक गिलास में शराब उँड़ेलकर देता है) लीजिए महाराज! पीजिए महाराज!

राजा—(मुँह बना-बनाकर पीता है) और दे।

(नेपथ्य में 'दुहाई है दुहाई'—का शब्द होता है)

कौन चिल्लाता है—पकड़ लाओ।

(दो नौकर एक फ़रियादी को पकड़ लाते हैं)

फ़रियादी—दोहाई है महाराज, दोहाई है। हमारा न्याव होय।

राजा—चुप रहो। तुम्हारा न्याव यहाँ ऐसा होगा कि जैसा यम के यहाँ भी न होगा— बोलो क्या हुआ?

फ़रियादी—महाराज! कल्लू बनियाँ की दीवार गिर पड़ी, सो मेरी बकरी उसके नीचे दब गई। दोहाई है महाराज, न्याव हो।

फरियादी—प्रार्थी/गुहार लगाने वाला
नेपथ्य – पर्दे के पीछे
न्याव – न्याय
बोदा – कमज़ोर
आशना – प्रिय

राजा—(नौकर से) कल्लू बनिए की दीवार को अभी पकड़ लाओ।

मंत्री—महाराज, दीवार नहीं लाई जा सकती।

राजा—अच्छा, उसका भाई, लड़का, दोस्त, आशना, जो भी हो उसको पकड़ लाओ।

मंत्री—महाराज! दीवार ईंट-चूने की होती है, उसको भाई-बेटा नहीं होता।

राजा—अच्छा, कल्लू बनिए को पकड़ लाओ।

(नौकर लोग दौड़कर बाहर से बनिए को पकड़ लाते हैं)

क्यों बे बनिए! इसकी लरकी, नहीं बरकी क्यों दबकर मर गई?

मंत्री—बरकी नहीं महाराज, बकरी।

राजा—हाँ-हाँ, बकरी क्यों मर गई— बोल, नहीं अभी फाँसी देता हूँ।

कल्लू—महाराज! मेरा कुछ दोष नहीं। कारीगर ने ऐसे दीवार बनाई कि गिर पड़ी।

राजा—अच्छा, इस मल्लू को छोड़ दो, कारीगर को पकड़ लाओ।

(कल्लू जाता है, लोग कारीगर को पकड़कर लाते हैं)

क्यों बे कारीगर! इसकी बकरी किस तरह मर गई?

कारीगर—महाराज, मेरा कुछ कसूर नहीं, चूने वाले ने ऐसा बोदा चूना बनाया कि दीवार गिर पड़ी।

राजा—अच्छा, इस कारीगर को बुलाओ, नहीं-नहीं निकालो, उस चूने वाले को बुलाओ।

(कारीगर निकाला जाता है, चूने वाला पकड़कर लाया जाता है)

क्यों बे, खैर-सोपाड़ी-चूने वाले! इसकी बकरी कैसे मर गई?

चूने वाला—महाराज! मेरा कुछ दोष नहीं, भिश्ती ने चूने में पानी ढेर दे दिया, इसी से चूना कमज़ोर हो गया होगा।

राजा—अच्छा, चुन्नीलाल को निकालो, भिश्ती को पकड़ो।

(चूने वाला निकाला जाता है, भिश्ती लाया जाता है) क्यों बे भिश्ती! गंगा-जमुना की किश्ती! इतना पानी क्यों दिया कि इसकी बकरी गिर पड़ी और दीवार दब गई?

भिश्ती—महाराज! गुलाम का कोई कसूर नहीं, कसाई ने मशक इतनी बड़ी बनाई कि उसमें पानी जादे आ गया।

राजा—अच्छा, कसाई को लाओ, भिश्ती निकालो।

(लोग भिश्ती को निकालते हैं, कसाई को लाते हैं)

क्यों बे कसाई, मशक ऐसी क्यों बनाई कि दीवार लगाई बकरी दबाई?

कसाई—महाराज! गड़रिया ने टके पर ऐसी बड़ी भेड़ मेरे हाथ बेची कि उसकी मशक बड़ी बन गई।

राजा—अच्छा, कस्साई को निकालो, गड़रिए को लाओ!

(कस्साई निकाला जाता है, गड़रिया आता है) क्यों बे गड़रिए, ऐसी बड़ी भेड़ क्यों बेची कि बकरी मर गई?

चित्र 15.4

गड़रिया—महाराज! उधर से कोतवाल साहब की सवारी आ गई, तो उसको देखने में मैंने छोटी-बड़ी भेड़ का ख़्याल नहीं किया, मेरा कुछ कसूर नहीं।

राजा—अच्छा, इसको निकालो, कोतवाल को अभी पकड़ लाओ।

(गड़रिया निकाला जाता है, कोतवाल पकड़ा जाता है)

भिश्ती – पानी वाला
मशक – पानी भरने का चमड़े का थैला
दरबार बरख़ास्त – सभा समाप्त
ढेर – बहुत सारा
सवारी – जुलूस की शक्ल में निकलना

क्यों बे कोतवाल! तैंने सवारी ऐसी धूम से क्यों निकाली कि गड़रिए ने घबड़ाकर बड़ी भेड़ बेची, जिससे बकरी गिरकर कल्लू बनियाँ दब गया?

कोतवाल—महाराज! महाराज! मैंने तो कोई कसूर नहीं किया, मैं तो शहर के इंतज़ाम के वास्ते जाता था।

मंत्री—(आप ही आप) यह तो बड़ा गज़ब हुआ, ऐसा न हो कि यह बेवकूफ़ इस बात पर सारे नगर को फूँक दे या फाँसी दे दे।

(कोतवाल से) यह नहीं, तुमने ऐसे धूम से सवारी क्यों निकाली?

राजा—हाँ-हाँ, यह नहीं, तुमने ऐसे धूम से सवारी क्यों निकाली कि उसकी बकरी दबी?

कोतवाल—महाराज-महाराज...

राजा—कुछ नहीं, महाराज-महाराज, ले जाओ, कोतवाल को अभी फाँसी दो। दरबार बरख़ास्त।

(लोग एक तरफ़ कोतवाल को पकड़कर ले जाते हैं, दूसरी ओर से मंत्री को पकड़कर राजा जाते हैं)

धूम से – शान से
इंतज़ाम के वास्ते – प्रबंध करने के लिए
बरख़ास्त – समाप्त
अरण्य – जंगल, वन
साँचे – सच्चे व्यक्ति
छली – छल करने वाले
पनही – जूती
एका – एकता

(पटाक्षेप)

पाँचवा दृश्य

स्थान—अरण्य

(गोबरधनदास गाते हुए आते हैं)

अंधेर नगरी अनबूझ राजा।
टका सेर भाजी टका सेर खाजा।।
साँचे मारे-मारे डोलैं ।
छली दुष्ट सिर चढ़ि-चढ़ि बोलैं।।
प्रगट सभ्य अंतर छलधारी ।
सोई राजसभा बल भारी।।
साँच कहैं ते पनही खावैं ।
झूठे बहु विधि पदबी पावैं।।
छलियन के एका के आगे ।
लाख कहो एकहु नहिं लागे।।
अंधाधुंध मच्यौ सब देसा ।
मानहुँ राजा रहत विदेसा।।
अंधेर नगरी अनबूझ राजा ।
टका सेर भाजी टका सेर खाजा।।

(बैठकर मिठाई खाता है)

गुरु जी ने हमको नाहक यहाँ रहने से मना किया था। माना कि देस बहुत बुरा है, पर अपना क्या? अपन किसी राजकाज में थोड़े हैं कि कुछ डर है, रोज़ मिठाई चाभना, मज़े में आनंद से रामभजन करना।

(मिठाई खाता है)

(चार प्यादे चार ओर से आकर उसको पकड़ लेते हैं)

प्यादा– 1—चल बे चल, बहुत मिठाई खाकर मुटाया है। आज पूरी हो गई।

प्यादा– 2—बाबा जी चलिए, नमोनारायन कीजिए।

गोबरधनदास—(घबड़ाकर) हैं! यह आफ़त कहाँ से आई! अरे भाई, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है, जो मुझको पकड़ते हो?

प्यादा– 1—आपने बिगाड़ा है या बनाया है, इससे क्या मतलब, अब चलिए। फाँसी चढ़िए।

गोबरधनदास—फाँसी! अरे बाप-रे-बाप फाँसी! मैंने किसकी जमा लूटी है कि मुझको फाँसी! मैंने किसके प्राण मारे कि मुझको फाँसी!

प्यादा– 2—आप बड़े मोटे हैं, इस वास्ते फाँसी होती है।

गोबरधनदास—मोटे होने से फाँसी? यह कहाँ का न्याय है! अरे, हँसी फकीरों से नहीं करनी होती।

प्यादा– 1—बात यह है कि कल कोतवाल को फाँसी का हुक्म हुआ था। जब फाँसी देने को उनको ले गए, तो फाँसी का फंदा बड़ा हुआ, क्योंकि कोतवाल साहब दुबले हैं। हम लोगों ने महाराज से अर्ज़ किया, इस पर हुकुम हुआ कि एक मोटा आदमी पकड़कर फाँसी दे दो, क्योंकि बकरी मारने के अपराध में किसी-न-किसी को सज़ा होनी ज़रूर है, नहीं तो न्याव न होगा। इसी वास्ते तुमको ले जाते हैं कि कोतवाल के बदले तुमको फाँसी दें।

गोबरधनदास—तो क्या और कोई मोटा आदमी इस नगर-भर में नहीं मिलता, जो मुझ अनाथ फ़कीर को फाँसी देते हैं?

प्यादा– 1—इसमें दो बातें हैं– एक तो नगर-भर में राजा के न्याव के डर से कोई मुटाता ही नहीं, दूसरे और किसी को पकड़ें, तो वह न जाने क्या बात बनाए और फिर इस राज में साधू-महात्मा इन्हीं लोगों की तो दुर्दशा है, इससे तुम्हीं को फाँसी देंगे।

गोबरधनदास—दुहाई परमेश्वर की, अरे मैं नाहक मारा जाता हूँ। अरे यहाँ बड़ा ही अंधेर है, अरे गुरु जी महाराज का कहा मैंने न माना, उसका फल मुझको भोगना पड़ा। गुरु जी कहाँ हो! आओ, मेरे प्राण बचाओ, अरे मैं बेअपराध मारा जाता हूँ। गुरु जी, गुरु जी....

(गोबरधनदास चिल्लाता है, प्यादे उसको पकड़कर ले जाते हैं)

नाहक – व्यर्थ में
चाभना – चबाना
प्यादा – पैदल सिपाही
दुर्दशा – बुरी स्थिति

टिप्पणी

अर्ज़ करना – निवेदन करना
माजरा – मामला
साइत – मुहूर्त, शुभ घड़ी
हुकुम – आदेश
आफ़त – संकट
हुज्जत – बहस करना

(पटाक्षेप)

छठा दृश्य

स्थान–श्मशान

(गोबरधनदास को पकड़े हुए चार सिपाहियों का प्रवेश)

गोबरधनदास–हाय! मैंने गुरु जी का कहना न माना, उसी का फल है। गुरु जी कहाँ हो? बचाओ-बचाओ! गुरु जी- गुरु जी...!

(रोता है, सिपाही लोग उसे घसीटते हुए ले चलते हैं। गुरु जी और नारायणदास आते हैं)

गुरु–अरे बच्चा गोबरधनदास! तेरी यह क्या दशा है?

गोबरधनदास–(गुरु जी को हाथ जोड़कर) गुरु जी! दीवार के नीचे बकरी दब गई, सो इसके लिए मुझे फाँसी देते हैं, गुरु जी बचाओ।

गुरु–अरे बच्चा! मैंने तो पहिले ही कहा था कि ऐसे नगर में रहना ठीक नहीं, तैंने मेरा कहना नहीं सुना... कोई चिंता नहीं, नारायण सब समर्थ हैं।

(भौं चढ़ाकर सिपाहियों से)

सुनो, मुझको अपने शिष्य को अंतिम उपदेश देने दो, तुम लोग तनिक किनारे हो जाओ, देखो मेरा कहना न मानोगे, तो तुम्हारा भला न होगा।

सिपाही–नहीं महाराज, हम लोग हट जाते हैं। आप बेशक उपदेश दीजिए।

(सिपाही हट जाते हैं। गुरु जी चेले के कान में कुछ समझाते हैं)

गोबरधनदास–(प्रगट) तब तो गुरु जी हम फाँसी चढ़ेंगे।

महंत–नहीं बच्चा, मुझको चढ़ने दे।

गोबरधनदास–नहीं गुरु जी, हम फाँसी चढ़ेंगे।

महंत–नहीं बच्चा हम। इतना समझाया, नहीं मानता, हम बूढ़े भये, हमको जाने दे।

गोबरधनदास–स्वर्ग जाने में बूढ़ा-जवान क्या? आप तो सिद्ध हैं, आपको गति-अगति से क्या? मैं फाँसी चढ़ूँगा।

(इसी प्रकार दोनों हुज्जत करते हैं। सिपाही लोग चकित होते हैं)

सिपाही–1–भाई! यह क्या माजरा है, कुछ समझ में नहीं पड़ता।

सिपाही–2–हम भी नहीं समझ सकते कि यह कैसी गड़बड़ है।

(राजा, मंत्री, कोतवाल आते हैं)

राजा—यह क्या गोलमाल है?

सिपाही 1—महाराज! चेला कहता है, मैं फाँसी पड़ूँगा। गुरु कहता है, मैं पड़ूँगा, कुछ मालूम नहीं पड़ता कि क्या बात है!

राजा—(गुरु से) बाबा जी! बोलो। काहे को आप फाँसी चढ़ते हैं?

महंत—राजा! इस समय ऐसी साइत है कि जो मरेगा, सीधा बैकुंठ जाएगा।

मंत्री—तब तो हमीं फाँसी चढ़ेंगे।

गोबरधनदास—हम-हम। हमको तो हुकुम है।

कोतवाल—हम लटकेंगे। हमारे सबब तो दीवार गिरी।

राजा—चुप रहो सब लोग। राजा के रहते और कौन बैकुंठ जा सकता है। हमको फाँसी चढ़ाओ—जल्दी, जल्दी।

महंत—

जहाँ न धर्म न बुद्धि नहिं नीति न सुजन समाज।

ते ऐसेहि आपुहिं नसैं, जैसे चौपट राज।

(राजा को लोग टिकठी पर खड़ा करते हैं)

टिप्पणी

सबब – कारण
बैकुंठ – स्वर्ग
सुजन – सज्जन
आपुहिं – अपने आप
नसै – नष्ट होते हैं
चौपट राज – मूर्ख और अयोग्य राज
टिकठी – फाँसी का तख़्ता

बोध-प्रश्न

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. अंधेर नगरी के बारे में क्या सच नहीं है—
   - क) हर व्यक्ति अपनी बला दूसरे पर टालता है। ☐
   - ख) राजा के अधिकारी चापलूस और मूर्ख हैं। ☐
   - ग) गुणों की कोई कद्र नहीं है। ☐
   - घ) राजा बहुत न्यायप्रिय है। ☐
2. गोबरधनदास को पकड़कर ले जाया गया, क्योंकि—
   - क) उसने अपने गुरु का कहना नहीं माना ☐
   - ख) वह भीख माँगकर मिठाई खा रहा था। ☐
   - ग) किसी–न–किसी को फाँसी लगानी ही थी। ☐
   - घ) उस मुहूर्त में मरने वाला सीधे स्वर्ग जाता। ☐

टिप्पणी

15.2 आइए समझें

आइए, नाटक और उसके तत्त्वों के आधार पर पाठ को अच्छी तरह से समझने की कोशिश करें।

आप जब कोई कहानी, उपन्यास, निबंध और नाटक पढ़ते होंगे, तब एक फ़र्क नाटक और दूसरी विधाओं के बीच अवश्य महसूस करते होंगे। वह फ़र्क है दृश्य का। दृश्य का संबंध मंच से है, यानी नाटक मंच पर खेला जाता है। यह तत्त्व नाटक को अन्य साहित्यिक विधाओं से अलग करता है।

'अंधेर नगरी' व्यंग्य और हास्य प्रधान नाटक है। सवाल यह है कि 'व्यंग्य' क्या है? किसी रचना में जब रचनाकार वस्तु या परिस्थिति की असंगति और अटपटेपन को उजागर करता है और उसे पढ़ते-सुनते हुए थोड़ी-बहुत हँसी भी आती है तो उसे व्यंग्य-रचना कह सकते हैं। अच्छे व्यंग्य के लिए उस परिस्थति विशेष के सही रूप की जानकारी ज़रूरी है जिस पर चोट की जाती है। व्यंग्य के माध्यम से झूठे आडंबरों या कुरीतियों पर चोट की जाती है।

15.2.1 कथावस्तु

कथावस्तु नाटक का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। कथावस्तु का संबंध नाटक में वर्णित विषय से होता है। कथावस्तु को स्पष्ट करने के लिए घटनाओं, स्थितियों और पात्रों की रचना की जाती है। इस तरह से जो आरंभ, मध्य और अंत वाला कथा-रूप बनता है, उसे कथानक कहते हैं। जैसे–इस नाटक की कथावस्तु है – एक ऐसे नगर की विसंगतियों का चित्रण, जहाँ न्याय-अन्याय में फ़र्क नहीं किया जाता। कथानक है–महंत, गोबरधनदास, नारायणदास, हलवाई, फ़रियादी, कल्लू बनिया, कारीगर, कोतवाल, मंत्री और राजा आदि पात्रों के और बकरी के मर जाने तथा उसके लिए दोषी व्यक्ति को सज़ा सुनाने की घटना के ज़रिए कथा का विकास।

चित्र 15.5

आपने नाटक पढ़ने के बाद उसमें वर्णित कथा को भी समझ लिया होगा। महंत अपने दो चेलों के साथ जिस 'अंधेर नगरी' में पहुँचता है, वहाँ हर वस्तु का भाव समान है। हर वस्तु टके सेर बेची जा रही है। यह देखकर गुरु (महंत) को हैरत होती है और अनहोनी की आशंका

भी। वह अपने चेलों को तुरंत नगर छोड़ देने की सलाह देता है। पर, चेला गोबरधनदास गुरु की राय न मानकर उसी नगर में रह जाता है। दूसरी तरफ़ एक दुर्घटना (दीवार से दब कर बकरी का मर जाना) के बाद फ़रियादी राजा के पास न्याय की आशा लेकर पहुँचता है। राजा के हुक्म के बाद बकरी के मरने के लिए ज़िम्मेदार के रूप में क्रमशः कल्लू बनिए, कारीगर, चूने वाले, भिश्ती, कसाई, गड़रिए और कोतवाल को पकड़कर लाया जाता है, क्योंकि हरेक व्यक्ति किसी दूसरे को ज़िम्मेदार बनाकर ख़ुद छूटता जाता है। अंततः गोबरधनदास को पकड़ लिया जाता है। गोबरधनदास को फाँसी की सज़ा महज़ इसलिए दी जाती है कि उसकी गर्दन मोटी है। फाँसी के पहले चेला गोबरधनदास अपने गुरु को पुकारता है। गुरु यानी महंत आकर गोबरधनदास से गुप्त मंत्रणा करता है। फिर गुरु-चेले में वाद-विवाद होने लगता है। कारण पूछने पर महंत बताता है कि इस शुभ मुहूर्त में जो फाँसी चढ़ेगा, उसे बैकुंठ मिलेगा। अब राजा का फ़रमान फिर जारी होता है और बैकुंठ पर अपना पहला हक जताते हुए वह फाँसी के फंदे पर झूल जाता है।

पाठगत प्रश्न-15.1

1. निम्नलिखित कथनों में से सही के आगे (√) का और गलत के आगे (X) का निशान लगाइए—

   (क) अभिनेयता का तत्त्व नाटक को अन्य साहित्यिक विधाओं से अलग करता है। ☐

   (ख) निबंध में दृश्य प्रमुख होता है और नाटक में भाव या विचार। ☐

   (ग) सही मायने में व्यंग्यकार वही है जो समाज-हित को ध्यान में रखता हो। ☐

   (घ) यदि कोतवाल की गर्दन में फाँसी का फंदा आ भी जाता तो उसे फाँसी न दी जाती। ☐

   (ङ) शुभ मुहूर्त में फाँसी चढ़कर राजा अवश्य ही बैकुंठ गया होगा। ☐

2. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

   गोबरधनदास द्वारा अपने गुरु जी को पुकारने का उद्देश्य था—

   (क) राजा को फाँसी पर चढ़वाना ☐

   (ख) राजा से प्रजा की रक्षा करवाना ☐

   (ग) शुभ मुहूर्त का पता लगाना ☐

   (घ) ख़ुद को फाँसी से बचाना ☐

टिप्पणी

15.2.2 चरित्र-चित्रण

अंधेर नगरी के अनेक पात्रों में महंत गोबरधनदास, राजा और मंत्री महत्त्वपूर्ण हैं। **महंत** या **गुरु** का चरित्र विवेक का प्रतीक है। वह इस सच का संदेश देता है कि जहाँ व्यक्ति और वस्तु के गुणों की कद्र न हो और हर घटना, वस्तु या चरित्र के मूल्यांकन के लिए एक ही पैमाना अपनाया जाता हो, ऐसी शासन-व्यवस्था में रहना विपत्ति का कारण बन सकता है। आपने देखा कि गुरु द्वारा समझाए जाने पर भी गोबरधनदास अंधेर नगरी को नहीं छोड़ता। वह लोभ में पड़ जाता है। इसी का परिणाम है कि उसे फाँसी देने के लिए पकड़ लिया जाता है। नाटक के आरंभ में ही महंत अपने शिष्य से कहता है कि, 'यह नगर तो दूर से बड़ा सुंदर दिखाई देता है', पर साथ ही वह सावधान भी करता है कि 'लोभ मत करना', क्योंकि लोभ से 'मान' यानी इज़्ज़त या स्वाभिमान मिट जाता है। इस तरह, वह शुरू में ही 'दूर से दिखने' और 'वास्तविकता' में अंतर स्पष्ट कर देता है और लोभ या लालच में पड़कर स्वाभिमान की भावना के नष्ट होने का भी उपदेश देता है।

नाटक के अंत में महंत पुनः उपस्थित होता है और फाँसी की सज़ा पाए अपने शिष्य गोबरधनदास को बचाने तथा अविवेकी राजा को मृत्यु के मुँह में धकेलने का उपाय करता है। वह नाटक के अंत में यह स्पष्ट संदेश देता है कि ऐसा राज, जो धर्म और बुद्धि पर आधारित नहीं होता, जहाँ नीति और सज्जनों को स्थान नहीं मिलता— वह अपने आप ही नष्ट हो जाता है, जैसे कि चौपट राज समाप्त हो गया। इस प्रकार महंत के चरित्र के माध्यम से लेखक बुद्धि और विवेक का इस्तेमाल करके अपनी स्वाधीनता बचाने और छोटी-मोटी सुविधाओं में न पड़कर अपने स्वाभिमान की रक्षा करने का संदेश देता है।

गोबरधनदास एक ऐसा चरित्र है, जो लालच का शिकार हो जाता है। इसका दुखद फल भी उसे मिलता है। राजा के द्वारा उसे मृत्युदंड की सज़ा दी जाती है। गोबरधनदास सुख की ख़ातिर गुरु के उपदेश की अवहेलना करता है और अंधेर नगरी में ही रहने का निर्णय लेता है। वह आम भारतीयों की उस मानसिकता का प्रतिनिधि है, जो अपने छोटे-छोटे सुखों की ख़ातिर व्यवस्था की मनमानी और विवेकहीनता तथा अन्याय की ओर से आँखें मूँद लेते हैं। वे भूल जाते हैं कि आप जिस व्यवस्था में जी रहे हैं, अंततः उसका ख़ामियाज़ा आपको भी भुगतना पड़ता है।

राजा के बारे में नाटक बताता है कि वह चौपट है। वह सिर्फ़ भोग-विलास में डूबा रहता है। हर समय नशे में धुत्त रहने के संकेत से यह बात स्पष्ट होती है। यहाँ शराब का तो ज़िक्र है ही, साथ ही यह भी इशारा है कि वह आत्मकेंद्रित है और उसे अपने मूल कर्त्तव्य यानी जनता के दुख-सुख की भी चिंता नहीं है। वह अपनी जनता के प्रति संवेदनशील नहीं है। इसी कारण उसके राज में सच्चे लोग तो मारे जाते हैं और धूर्त तथा दुष्ट लोगों का वर्चस्व है। उसके राज में उन लोगों की बन आई है, जो ऊपरी तौर पर सभ्य होने का दिखावा करते हैं, पर भीतर-ही-भीतर कुचक्र चलाते रहते हैं। यहाँ सज्जनों को सज़ा मिलती है और झूठे लोग उपाधियों से नवाज़े जाते हैं, सम्मानित होते हैं। सारे देश में अंधाधुंध मचा हुआ है और ऐसा लगता है जैसे राजा यहाँ न होकर विदेश

में रहता हो। यह अंग्रेज़ी राज पर तो टिप्पणी है ही, क्या आज के संदर्भ में भी यह टिप्पणी उपयुक्त नहीं लगती? स्वाधीन भारत का शासक-वर्ग भी सीधे तौर पर तो विदेश से नियंत्रित नहीं होता, पर विदेशी कंपनियों के लिए रास्ता खोलने का काम करता हुआ ज़रूर लगता है। 'अंधेर नगरी' के 'चौपट्ट राजा' के लिए न्याय नहीं, उसका दिखावा महत्त्वपूर्ण है। राजा के इस संवाद पर ध्यान दीजिए– ''तुम्हारा न्याय यहाँ ऐसा होगा कि जैसा यम के यहाँ भी न होगा।'' नाटक के अंत में बहुत ही सुंदर ढंग से आत्मकेंद्रिकता और विवेकहीनता को भी दिखाया गया है, जब राजा कहता है कि, ''राजा के रहते और कौन बैकुंठ जा सकता है। हमको फाँसी चढ़ाओ– जल्दी, जल्दी।''

'अंधेर नगरी' का अंतिम महत्त्वपूर्ण पात्र है– **मंत्री।** मंत्री के ऊपर शासन-व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने की ज़िम्मेदारी होती है, लेकिन यहाँ जो मंत्री है, वह यह जानते हुए भी कि राजा ठीक नहीं कर रहा है, उसकी चापलूसी करने में जुटा रहता है। इस प्रकार, वह उस वर्ग का प्रतिनिधि पात्र है, जो औसत से अधिक समझ तो रखता है, पर सत्ता से नज़दीकी पाने और स्वार्थ पूरा करने के लिए अपनी बुद्धि और विवेक को गिरवी रख देता है। उसकी समझ का संकेत तब मिलता है, जब कोतवाल अपनी सवारी 'शहर के इंतज़ाम के वास्ते' निकालने की बात कहता है। वह सोचता है– ''यह तो बड़ा गज़ब हुआ, ऐसा न हो कि यह बेवकूफ़ (राजा) इस पर सारे नगर को फूँक दे या फाँसी दे दे।'' मगर, फाँसी किसी भी एक बेकसूर को मिल जाए– यह उसकी चिंता का विषय नहीं है। विवेकहीनता की यह स्थिति उसे भी बैकुंठ के लालच में डालने से नहीं चूकती और नाटक के अंत में वह भी फाँसी के दावेदारों में शामिल हो जाता है।

अन्य पात्रों में फ़रियादी, कुँजड़िन, हलवाई, मंत्री, कल्लू बनिया, कारीगर, चूनेवाला, भिश्ती, कसाई, गड़रिया, कोतवाल, प्यादे और सिपाही हैं। ये पात्र प्रसंगानुकूल कथा-विकास में अपना योगदान देते हैं। ऐसे पात्रों को गौण पात्र कहते हैं।

15.2.3 संवाद-योजना

नाटक में संवादों का विशेष महत्त्व होता है। 'अंधेर नगरी' नाटक के संवादों पर आपने ध्यान दिया होगा। ये संवाद नाटक के पात्रों के व्यक्तित्व की विशेषताओं को हमारे सामने स्पष्ट कर देते हैं। साथ ही, हास्य की रचना करते हुए व्यवस्था पर व्यंग्य करते हैं। आपने यह भी देखा होगा कि इन संवादों के प्रभावशाली होने का बहुत बड़ा कारण इनका संक्षिप्त या छोटा होना है। आइए, कुछ उदाहरणों के माध्यम से इस नाटक के संवादों की विशेषताओं को समझने का प्रयास करते हैं।

यह तो हम देख ही चुके हैं कि नाटक में महंत, गोबरधनदास, राजा और मंत्री– मुख्य पात्र हैं। यदि संवादों की दृष्टि से देखा जाए तो ये पात्र बातचीत में सबसे अधिक हिस्सा लेते हैं। ये जो कुछ बोलते हैं, उससे, अर्थात् इनके संवादों से इन पात्रों का व्यक्तित्व हमारे सामने स्पष्ट हो जाता है। महंत स्थितियों की असलियत को पहचान लेनेवाला और स्वाभिमान, स्वाधीनता के महत्त्व को जानने वाला विवेकवान पात्र है। उनकी इन विशेषताओं की बात संवादों से ही पता चलती है। वह अपने शिष्य से कहता है– ''बच्चा,

बहुत लोभ मत करना।'' वह शिष्य को फिर से सावधान करता है— ''तो बच्चा! ऐसी नगरी में रहना उचित नहीं है, जहाँ टके सेर भाजी और टके ही सेर खाजा हो।'' स्पष्ट है कि महंत का यह संवाद बहुत अर्थपूर्ण है। उसका आशय यह है कि जिस राज्य में असमान वस्तुओं में, सज्जनों और दुष्टों में अंतर ही नहीं किया जाता, उस राज्य में बसना विपत्ति का कारण हो सकता है। 'अंधेर नगरी' के संवादों की यह विशेषता हमें अनेक स्थलों पर मिलती है। इसी क्षमता के कारण यह नाटक सटीक और अचूक व्यंग्य रचने में समर्थ हुआ है।

गोबरधनदास के विषय में हमने पढ़ा कि वह अविवेक के कारण लोभ में फँसता है। लोभ के कारण वह अपने तक ही केंद्रित हो जाता है, फिर अपने को संकट में डालता है। निम्नलिखित संवाद उसकी इस विशेषता को प्रकट करता है—

'गुरु जी ने हमको नाहक यहाँ रहने से मना किया था। माना कि देश बहुत बुरा है, पर अपना क्या? अपन किसी राजकाज में थोड़े हैं कि कुछ डर है, रोज़ मिठाई चाभना, मज़े में आनंद से रामभजन करना।''

राजा के संवादों पर आपका ध्यान विशेष रूप से गया होगा। उसके संवादों में कोई तरतीब नहीं है। वह प्रत्येक से— चाहे उसका कोतवाल ही क्यों न हो, 'क्यों बे!' कहकर बात शुरू करता है। कुछ उदाहरण देखिए:

— कल्लू बनिए की दीवार को अभी पकड़ लाओ।

— अच्छा उसका भाई, लड़का, दोस्त, आशना, जो भी हो उसको पकड़ लाओ।

— क्यों बे बनिए! इसकी लरकी, नहीं बरकी क्यों दबकर मर गई?

उपर्युक्त संवादों से पता चलता है कि राजा का वास्तविक स्थितियों से कोई सरोकार नहीं है।

'अंधेर नगरी' के संवाद छोटे-छोटे हैं। जहाँ भी वे थोड़े बड़े हुए हैं, वहाँ उनमें तुक अथवा काव्यात्मकता आ गई है। ऐसी स्थिति में वे व्यंग्यात्मक गए हैं। लेकिन जो संवाद छोटे हैं, उनमें भी सार्थकता तथा व्यंग्य का पूरा निर्वाह है। कहीं-कहीं एक ही बात को बार-बार कहकर, उस पर बल देकर व्यंग्य की सृष्टि की गई है। जैसे—'टके सेर' पद संवादों में बार-बार आता है। इसे बार-बार कहने का अभिप्राय यह है कि अंधेर नगरी में सब कुछ टके सेर है, अर्थात् गुण के अनुसार मूल्य नहीं—सब कुछ टके सेर।

छोटे संवादों के एक और महत्त्व की ओर आपका ध्यान गया होगा। जब संवाद छोटे होते हैं तो बोलने वाले पात्र जल्दी-जल्दी बदलते रहते हैं और नाटक में रोचकता आती है। इससे घटना का विकास भी गति से होता है। साथ ही, ये अभिनेयता में भी सहायक होते हैं।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न-15.2

1. निम्नलिखित कथनों में से सही के आगे सही (√) तथा गलत के आगे गलत (X) का निशान लगाइए—

   (क) महंत लोभी नहीं, अवसरानुकूल निर्णय लेने वाला विवेकवान व्यक्ति था।

   (ख) गोबरधनदास समझदार था, इसलिए महंत के साथ नगर से नहीं गया।

   (ग) अंधेर नगरी में हलवाई प्रमुख पात्र नहीं है।

   (घ) लंबे संवाद नाटक के प्रभाव में वृद्धि करते हैं।

   (ङ) छोटे संवाद कथानक के विकास में बाधा बनते हैं।

2. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

   राजा ने स्वयं फाँसी चढ़ने का निर्णय क्यों लिया?

   (क) अपने को अपराधी मानकर

   (ख) साधुओं को दंड न देने की भावना से

   (ग) अपनी गर्दन फंदे के उपयुक्त मानकर

   (घ) स्वयं मुक्ति पाने की लालसा में

3. महंत ने वह नगर छोड़कर जाने का निर्णय क्यों लिया?

   (क) सभी वस्तु टके सेर मिलने के कारण

   (ख) पुलिस द्वारा रिश्वत लेने के कारण

   (ग) भावी संकट की आशंका के कारण

   (घ) गोबरधनदास द्वारा निंदा के कारण

15.2.4 परिवेश

परिवेश नाटक का एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। इसे देशकाल और वातावरण भी कहते हैं। जब हम 'अंधेर नगरी' को पढ़ते हैं तो इसके दृश्यों और पात्रों के संवादों के माध्यम से हमें कुछ ऐसी सूचनाएँ मिलती हैं, जिनसे हमारे सामने नाटक में व्यक्त वातावरण उभर आता है। इस नाटक में कुल छह दृश्य हैं। इनमें बाज़ार, जंगल और राजसभा के दृश्य प्रमुख हैं। बाज़ार के दृश्य के माध्यम से तत्कालीन लोक-संस्कृति का पता चलता है। आपने ध्यान दिया होगा कि इस दृश्य में अधिकतर लोग साधारण स्थिति के हैं, जिन्हें

हम आम जनता का प्रतिनिधित्व करने वाले लोग कह सकते हैं। जब साहित्य में आम लोगों का चित्रण होता है, तो उनकी संस्कृति को भी अभिव्यक्त किया जाता है, इसे लोक-संस्कृति भी कह सकते हैं। 'अंधेर नंगरी' में बाज़ार के दृश्य को पढ़कर हम सामान्य लोगों के सोचने-विचारने के तरीके, उनकी व्यंग्य-क्षमता, भाषाई विशेषताओं आदि से परिचित होते हैं। कुल मिलाकर इसे लोक-संस्कृति कहा जा सकता है।

यह तो आप जान ही चुके हैं कि इस नाटक को लिखने का उद्‌देश्य अंग्रेज़ी शासन के कारण भारत की दुर्दशा को चित्रित करना है। भारतेंदु कहना चाहते हैं कि अंग्रेज़ों ने अपनी नीतियों से भारत को अंधेर नगरी बना दिया, न यहाँ पर किसी नियम का पालन किया जाता है, न ही कोई न्याय-व्यवस्था है। देश की जनता अंग्रेज़ी व्यवस्था के कुचक्र में फँसी हुई है। इसी वातावरण के संकेत इस नाटक के प्रत्येक दृश्य में हैं। बाज़ार के दृश्य में घासीराम चनेवाला, हलवाई, चूरनवाला, बनिया—ये सब संवादों के माध्यम से स्थितियों पर व्यंग्य करते हैं। कहने को तो सब आवाज़ लगा-लगाकर अपना सामान बेच रहे हैं, लेकिन बीच-बीच में उन सब पर व्यंग्य करते हैं, जो निकम्मी शासन-व्यवस्था के अंग हैं।

नाटक में दिखाया गया है कि जो नगर दूर से सुंदर दिखता है, वह भीतर से कितना कुरूप हो रहा है। जिस नगर के लोग ऊपर-ऊपर से मालदार लगते हैं, वे भीतर-भीतर से निर्धन हो रहे हैं। इन सबकी ज़िम्मेदार गुलाम बना लेने वाली व्यवस्था है। लेखक के अनुसार जब भारत अंग्रेज़ों का गुलाम था तब ऐसी ही अव्यवस्था थी। इस व्यवस्था में सब चीज़ें टके सेर मिलती हैं। यह अंधेर नगरी है अर्थात् इसमें कोई कानून-व्यवस्था नहीं। इसका राजा चौपट है अर्थात् संवेदनहीन, कुछ भी न समझने-बूझने वाला। ऐसी अंधेर नगरी की असलियत को, इसमें रहने के जोखिम को महंत जानता है। वह जानता है कि ऐसी व्यवस्था में जहाँ हरेक चीज़ का मोल एक ही है, अर्थात् शरीफ़ और बदमाश में कोई भेद नहीं किया जाता, वहाँ किसी के जुर्म की सज़ा किसी को भी मिल सकती है। नाटक के अंत में हम ऐसा होते हुए देख भी सकते हैं। इसीलिए महंत गोबरधनदास से पहले ही कह देता है— "ऐसी अंधेर नगरी में हज़ार मन मिठाई मुफ़्त की मिले तो किस काम की? यहाँ एक क्षण नहीं रहना।" इस अंधेर नगरी की न्याय-प्रक्रिया के आडंबर को नाटक में बहुत ही मनोरंजक तरीके से चित्रित किया गया है।

15.2.5 भाषा-शैली

इस नाटक को पढ़ते समय आपका ध्यान इसकी भाषागत विशेषताओं की ओर अवश्य गया होगा। नाटक में आए संवाद में लगै, मिलै, होय आदि अभिव्यक्तियों पर ध्यान दीजिए। यदि इन्हें हम खड़ी बोली हिन्दी में कहें तो ये—लगे, मिले, हो आदि हो जाएँगे। भारतेन्दु ने इन अभिव्यक्तियों का प्रयोग क्यों किया? इसलिए कि भारतेन्दु के समय तक साहित्य की भाषा ब्रजभाषा थी। 'अंधेर नगरी' की भाषा पर ब्रजभाषा का असर है।

इस नाटक की भाषा एक विशेष प्रकार के वातावरण को हमारे सामने सजीव कर देती है। महंत और उसके शिष्यों के बीच बातचीत, बाज़ार के दृश्य में अपना-अपना सामान बेचने वाले दुकानदारों द्वारा सामान बेचने के तरीके और दरबार के दृश्यों पर ध्यान दीजिए, लगेगा जैसे हम स्वयं उस वातावरण में उपस्थित होकर उसे साक्षात देख रहे

हैं। इस नाटक में यह कार्य भाषा के माध्यम से किया गया है। क्या आप जानते हैं कि भाषा के माध्यम से वातावरण निर्माण कैसे होता है? आइए, 'अंधेर नगरी' की भाषा के कुछ नमूनों से इस बात को समझने का प्रयास करते हैं। सबसे पहले महंत और उसके चेलों के नाम और उनकी भाषा पर ध्यान दीजिए। महंत के चेलों के नाम हैं— नारायणदास और गोबरधनदास। इन नामों को सुनते ही आपके सामने साधुओं के शिष्यों की तस्वीर उभर आती होगी। इसके साथ ही बच्चा, भिच्छा-उच्छा, ठाकुरजी, भोग, गुरुजी महाराज!, आनंद होय, सीधा-सामग्री, श्री शालिग्राम जी का बालभोग जैसी शब्दावली साधु-संतों और महंतों की शब्दावली है, जिसे लेखक जानता है और जिसका प्रयोग करता है। साधु-संत बात-बात में नीतिपरक दोहों का भी प्रयोग करते हैं। महंत के संवादों में ये दोहे आते हैं। जैसे—

> लोभ पाप को मूल है, लोभ मिटावत मान।
> लोभ कभी नहीं कीजिये, या में नरक निदान।।

घासीराम आदि दुकानदारों के संवादों में बाबू, हाकिम, महाजन, लाला, एडीटर, साहेब, पुलिस आदि की करतूतों पर व्यंग्य करके तत्कालीन वातावरण की ओर संकेत किया गया है। इनके साथ-साथ चना खाने वालों में अगर मुन्ना है तो गफ़ूर भी है। आप जानते हैं— मुन्ना और गफ़ूर को एक साथ रखने का क्या महत्त्व है? यहाँ पर भारतेन्दु भारत की सांस्कृतिक स्थिति का परिचय देते हैं। उस समय भारत की स्थिति का चित्रण करने वाला कोई भी नाटक इस सांस्कृतिक स्थिति का चित्रण किए बिना महत्त्वपूर्ण नहीं हो सकता था। आप जानते ही हैं कि अंग्रेज़ी शासन में भारत के हिंदू और मुसलमान सभी पिस रहे थे। सभी को मुक्ति की ज़रूरत थी। इसीलिए 1857 में ये दोनों मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध लड़े थे।

'अंधेर नगरी' की भाषा में हिंदी के तत्सम, तद्भव, देशज शब्दों के साथ-साथ आगत शब्दों के फ़ारसी, अंग्रेजी शब्दों का भी अवसरानुकूल प्रयोग किया गया है। भारतेन्दु ने इस बात का पूरा ध्यान रखा है कि जैसा पात्र है, उसी के स्वभाव एवं आचरण के अनुकूल उसकी भाषा हो। यहाँ भाषा पात्रों की नाटकीयता को भी पूरी तरह से अभिव्यक्त करने में सक्षम है अर्थात् नाटक को पढ़ते समय हमारे सामने पात्र अपने अभिनय के साथ उपस्थित होते हैं। भाषा की यह क्षमता किसी भी प्रभावशाली रचना में आवश्यक होती है। इसकी ज़रूरत अन्य विधाओं में भी होती हैं, लेकिन इसकी सबसे अधिक अपेक्षा नाटक में होती है।

'अंधेर नगरी' की भाषा-शैली में व्यंग्यात्मक अभिव्यक्तियों का बहुत महत्त्व है। नाटककार भारतेन्दु ने बाज़ार में सामान बेचने वाले घासीराम, पाचक वाले बनिया, हलवाई आदि के संवादों में दो काम एक साथ किए हैं। एक तो वे अपना सामान बेचने के लिए क्षेत्रीय अभिव्यक्तियों, लोक-काव्य, तुक का प्रयोग करते हैं। दूसरे उनकी इन अभिव्यक्तियों में कुशासन पर संकेत रूप में चोट भी की गई है। ये अभिव्यक्तियाँ अराजकता के वातावरण को भी सजीव रूप में हमारे सामने रखती हैं। घासीराम चने की विशेषताएँ तो बताता ही है, यह भी कहता है कि— ''चना हाकिम सब जो खाते। सब पर दूना टिकस लगाते।'' हलवाई के संवाद में जलेबी, रेवड़ी, पापड़ की विशेषताएँ ध्वन्यात्मक

टिप्पणी

रूप में प्रकट हुई हैं, जैसे— जलेबियाँ गरमागरम। घी में गरम..., रेवड़ी कड़ाका, पापड़ पड़ाका।

'अंधेर नगरी' में राजा की प्रजा के रूप में अनेक प्रकार का काम करने वाली सामान्य प्रजा और उसकी दुर्दशा का वर्णन किया गया है। भाषा में भी इस सामान्य लोगों के व्यवसाय से संबंधित शब्दावली का उल्लेख है। कारीगर है तो चूना भी है, भिश्ती है तो मशक भी है, कसाई गडरिया है तो भेड़ भी है।

पाठगत प्रश्न-15.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. घासीराम अफसरों के बारे में व्यंग्य करता है कि वे—

   (क) निकम्मे होते हैं ☐ (ख) चाव से चने खाते हैं ☐

   (ग) मुफ्त में चने खाते हैं ☐ (घ) टैक्स बढ़ा देते हैं ☐

2. 'अंधेरी नगरी' की भाषा पर निम्नलिखित में से किसका प्रभाव अधिक है—

   (क) राजस्थानी ☐ (ख) ब्रज ☐

   (ग) हरियाणवी ☐ (घ) मैथिली ☐

3. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द किसी आगत शब्द का परिवर्तित रूप नहीं है—

   (क) टिकस ☐ (ख) कसूर ☐

   (ग) हजम ☐ (घ) लड्डुआ ☐

क्रियाकलाप-15.1

आपने नाटक पढ़ा। आप जान चुके हैं कि यह नाटक आत्मकेंद्रित, स्वार्थी और अविवेकी व अन्यायी शासन-व्यवस्था में आम जनता की समस्या पर लिखा गया है। इसका उद्देश्य भी शासन-व्यवस्था (ब्रिटिश) की ऊपरी सुनहली परत के भीतर मौजूद विसंगतियों के प्रति आम लोगों को जागरूक बनाना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए भारतेंदु ने भाषा के लोक-रूप का प्रयोग किया है यानी स्थानीय स्तर पर लोग जिस तरह के शब्दों, संबोधनों, मुहावरों, अभिव्यक्तियों आदि का प्रयोग करते हैं, उनका बहुतायत में प्रयोग किया है, कुछ उदाहरण देखिए और निर्देशानुसार अभ्यास कीजिए :

शब्द: भिच्छा, टिकस, मुरइ अजीरन, छन, बाजे-बाजे, उपास, न्याव, सोपाड़ी, चाभना, तैंने, दोहाई साइत

उपयुक्त शब्दों के लिए मानक हिंदी में प्रयुक्त शब्द लिखिए।

(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(v)	(vi)	(vii)	(viii)
(ix)	(x)	(xi)	(xii)

संबोधन :

इन संबोधनों से किस स्थिति का पता लगता है— सम्मान, वत्सलता, आत्मीयता, औपाचारिकता, अधिकार :

(i) बच्चा

(ii) गुरु जी महाराज

(iii) भाई बनिए

(iv) भाई

(v) बाबा जी

(vi) महाराज

(vii) क्यों बे

मुहावरे

निम्नलिखित पंक्तियों से मुहावरे छाँटकर यहाँ लिखिए :

(i) चूरन खावै एडिटर जात। जिनके पेट पचै नहिं बात।।

मु. पेट में बात न पचना

(ii) चूरन साहेब लोग जो खाता। सारा हिंद हजम कर जाता।।

मु. ....

(iii) साढ़े तीन सेर मिठाई दे दे, गुरु-चेले सब आनंदपूर्वक इतने में छक जाएँगे।

मु. ....

(iv) साँचे मारे-मारे डोलें। छली दुष्ट सिर चढ़ि-चढ़ि बोलें।।

मु. – (क) ....

(ख) ....

15.2.6 उद्देश्य

आप इस बात से परिचित होंगे कि प्रत्येक रचना के पीछे रचनाकार का कोई-न-कोई उद्देश्य अवश्य होता है। जानते हैं कि 'अंधेर नगरी' लिखने के पीछे भारतेंदु हरिश्चंद्र

का उद्देश्य क्या था? 'अंधेर नगरी' एक व्यंग्यात्मक नाटक है। इसके शीर्षक और संवादों में जगह-जगह व्यंग्योक्तियाँ मिलती हैं। व्यंग्य क्या है— यह आप पढ़ ही चुके हैं। 'अंधेरी नगरी' का उद्देश्य व्यंग्य के माध्यम से अन्यायी शासन-व्यवस्था की विसंगतियों—कमियों को हमारे सामने उजागर करना है। इस नाटक में राजा अन्यायी शासन—व्यवस्था का प्रतीक है। इसीलिए उसे चौपट्ट राजा और उसकी नगरी को अंधेर नगरी कहा गया है। इस चौपट राजा के शासन में सब कुछ टके सेर है यानी गुणी और गुणहीन का एक ही मोल है अर्थात्, उनके साथ एक जैसा व्यवहार किया जाता है। भारतेन्दु का उद्देश्य केवल इतना नहीं है कि वे किसी अन्यायी राजा की कल्पना करके उस पर चोट करें। वे इस अन्यायी राजा के माध्यम से अंग्रेज़ी राज-व्यवस्था की कमियों पर चोट करते हैं। भारतेंदु के समय में भारत अंग्रेज़ों का गुलाम था। अंग्रेजी शासन की आलोचना सीधे-सीधे नहीं की जा सकती थी। उस समय के रचनाकारों ने अनेक प्रकार की ऐतिहासिक-काल्पनिक कथाओं एवं कहावतों का प्रतीकात्मक उपयोग करके व्यंग्य-रूप में तत्कालीन शासन-व्यवस्था की आलोचना की। 'अंधेरी नगरी' भी इसी प्रकार का नाटक है। इस नाटक से यह भी अभिव्यक्त होता है कि जब शासन-व्यवस्था ही भ्रष्ट हो तो उसके सभी सहायक अर्थात् मंत्री, सेठ, अधिकारी, पुलिस आदि भी भ्रष्ट हो जाते हैं। इन सब बातों के साथ यह नाटक हमें भी वह दृष्टि देता है, जिसके आधार पर हम अपने समय की शासन-व्यवस्था की आलोचना कर सकते हैं।

15.2.7 अभिनेयता

अभिनेयता का अर्थ है— मंच पर अभिनय किए जाने की क्षमता। किसी भी नाटक को सफल बनाने के लिए यह अनिवार्य तत्त्व है। यदि किसी नाटक में अभिनेयता का गुण न हो तो उस नाटक को मंच पर प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। आप कल्पना कीजिए कि आपको 'अंधेर नगरी' का मंचन करना है अर्थात् उसे खेलना है। इसके लिए आपको एक अलग दृष्टि से इस नाटक का अध्ययन करना होगा। यह विचार करना होगा कि इसे खेलने में क्या बाधाएँ हैं और इसे लिखते समय उन बाधाओं को दूर करने का कितना ध्यान भारतेन्दु ने रखा है। मंचन के लिए ही भारतेंदु ने 'अंधेर नगरी' को कुछ दृश्यों में बाँटा है— बताया है कि वे दृश्य कहाँ-कहाँ के हैं। इसके साथ ही पात्र कैसे प्रवेश करेंगे, किस भाव तथा मुद्रा में बोलेंगे, कैसे आएँगे-जाएँगे आदि को भी जगह-जगह स्पष्ट कर दिया गया है। नाटक की आलोचना की शब्दावली में इन्हें 'रंग-निर्देश' कहते हैं। रंग-निर्देश इसलिए आवश्यक हैं कि यदि कोई इस नाटक की अभिनय-योजना तैयार करे तो उसे आसानी हो। आप यह देखेंगे कि इस नाटक में कोई भी दृश्य या स्थिति ऐसी नहीं है जिसका अनुकरण न किया जा सके या जिसे मंच पर प्रस्तुत न किया जा सके। इस नाटक के प्रस्तुतिकरण के लिए बहुत अधिक साधनों की आवश्यकता नहीं है। इन सभी गुणों के कारण 'अंधेर नगरी' बहुत बार मंचित हुआ।

पाठगत प्रश्न-15.4

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. 'टके सेर भाजी टके सेर खाजा' में निहित व्यंग्यार्थ है–
   - (क) सभी चीज़ें बहुत सस्ती हैं ☐
   - (ख) एक टके की एक सेर भाजी खाओ ☐
   - (ग) गुणों और मूल्यों की कदर नहीं है ☐
   - (घ) सभी नागरिकों को समान महत्त्व मिले ☐
2. इस नाटक में 'अंधेर नगरी और चौपट्ट राजा' की कल्पना का कारण क्या है?
   - (क) ब्रिटिश शासन की सीधे तौर पर आलोचना न कर पाने की स्थिति ☐
   - (ख) दर्शकों के लिए हास्य-रस का वातावरण बनाने का प्रयास ☐
   - (ग) इतिहास के प्रसंगों की नयी व्याख्या प्रस्तुत करने का उपाय ☐
   - (घ) ब्रिटिश शासन की न्यायप्रियता को उभारने का दृष्टिकोण ☐
3. निम्नलिखित विकल्पों में से सही के आगे (√) और गलत के आगे (X) का निशान लगाइए–
   - (क) मंच के अनुकूल होना नाटक की सफलता के लिए आवश्यक है। ☐
   - (ख) 'अंधेर नगरी' के मंचन में अनावश्यक पात्रों का होना बड़ी बाधा है। ☐
   - (ग) भारतेन्दु ने 'अंधेर नगरी' में पर्याप्त रंग-निर्देश दिए हैं। ☐
   - (घ) 'अंधेर नगरी' के मंचन के लिए बहुत-से मंचीय साधनों की ज़रूरत है। ☐

आपने क्या सीखा

- 'अंधेर नगरी' एक व्यंग्य नाटक है, जिसमें शासन-व्यवस्था की विसंगतियों का उद्‌घाटन किया गया है।
- 'अंधेर नगरी' का आशय है–ऐसी नगरी जहाँ तानाशाह की सत्ता है, न्याय का आडंबर होता है और जनता का शोषण किया जाता है। ऐसी नगरी में गुणवान और गुणहीन लोगों में कोई भेद नहीं किया जाता।
- इस नाटक में एक राजा की कहानी के माध्यम से अंग्रेज़ी शासन-व्यवस्था पर करारी चोट की गई है।

- नाटक में यह संदेश दिया गया है कि लोभ में पड़कर देशहित को नहीं भूलना चाहिए। व्यक्ति एवं देशहित के लिए स्वाभिमान तथा स्वाधीनता का बहुत महत्त्व है।
- इस नाटक के संवाद संक्षिप्त हैं और व्यंग्य को उभारने में पूरी तरह सफल हुए हैं।
- नाटक की भाषा तत्कालीन वातावरण को सजीव रूप में प्रस्तुत करने में सक्षम है। साथ ही इसकी भाषा में व्यंग्यात्मकता तथा नाटकीयता है।
- नाटक में लोक-भाषा तथा स्थानीय शब्दावली का प्रयोग है, जिससे नाटक में जीवतंता और प्रवाहमयता आ गई है। इसकी भाषा खड़ी बोली है लेकिन ब्रजभाषा का भी स्पष्ट प्रभाव है दिखता है।
- 'अंधेर नगरी' रंगमंचीयता की दृष्टि से सफल नाटक है।

योग्यता विस्तार

भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्म 1850 ई. में बनारस में हुआ था। महज़ 35 वर्ष की आयु में ही भारतेंदु का निधन हो गया। उनका रचना-संसार आश्चर्यजनक रूप से विस्तृत है। वे हिन्दी साहित्य में आधुनिक-युग के प्रवर्तक हैं। देशभक्ति से संपन्न उनकी रचनाओं में अंग्रेज़ी शासन-व्यवस्था का विरोध तो है ही, अंधविश्वास और धार्मिक पाखंडों पर भी प्रहार है। आर्थिक-विषमता, स्वाधीनता तथा हिन्दी भाषा पर उनके लेखन को व्यापक लोकप्रियता प्राप्त हुई। उन्होंने नारी-शिक्षा और स्वाभिमान को भी अपने साहित्य-संसार का हिस्सा बनाया, 'बाला-बोधिनी' का संपादन इसका प्रमाण है। इसके अलावा उन्होंने 'कविवचन सुधा' 'हरिश्चंद्र मैगजीन' (बाद में 'हरिश्चंद्र चंद्रिका') नाम की पत्रिकाओं का संपादन किया। उनके मौलिक नाटक हैं— 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति', 'चंद्रावली', 'विषस्य विषमौषधम्,' 'भारत दुर्दशा,' 'नील देवी', 'प्रेम योगिनी', 'सती प्रताप'। उनके अनूदित नाटक हैं— 'विद्यासुंदर', 'पाखंड विडंबन' 'धनंजय विजय', 'कर्पूर-मंजरी' 'सत्य हरिश्चंद्र' आदि। उन्होंने ब्रजभाषा और खड़ी बोली दोनों में काव्य–रचना की। भारतेंदु नयी चेतना के प्रतीक साहित्यकार के रूप में याद किये जाते हैं। उनका सबसे बड़ा योगदान यह है कि उन्होंने साहित्य को मनोरंजन के कठघरे से निकालकर सामाजिक चेतना से जोड़ा। भारतेंदु से पहले जो नाटक लिखे जाते थे उनका देश की गुलामी और सामाजिक समस्याओं से कोई सरोकार न था, लेकिन भारतेंदु के नाटक इन समस्याओं को उठाकर जनता की चेतना को जागृत करते हैं।

टिप्पणी

पाठांत प्रश्न

1. आपने यह नाटक अच्छी तरह पढ़ लिया होगा। इस नाटक में आपको कौन-सा पात्र सबसे अच्छा लगा और क्यों?
2. भारतेंदु ने इस नाटक के माध्यम से अपने समय की शासन-व्यस्था पर करारा व्यंग्य किया है– स्पष्ट कीजिए।
3. मूल्यवान वस्तुएँ सस्ती होने पर भी महंत ने अंधेर नगरी में रहने के लिए मना क्यों किया?
4. 'अंधेर नगरी' नाटक में फेरीवालों की बातों से किस प्रकार का वातावरण अभिव्यक्त हुआ है– उल्लेख कीजिए।
5. अंधेर नगरी नाटक को लिखने के पीछे भारतेंदु का उद्देश्य क्या था– स्पष्ट कीजिए।
6. व्यंग्य-शैली शासन-व्यवस्था की आलोचना के लिए सर्वाधिक उपयुक्त शैली है– इस कथन पर अपने विचार 40-50 शब्दों में लिखिए।
7. 'अंधेर नगरी' की भाषा-शैली पर एक टिप्पणी लिखिए।
8. 'लोभ पाप का मूल है', लोभ मिटावत मान।

   लोभ कभी नहिं कीजिए, या में नरक निदान।।'

   महंत का यह कथन जितना 'अंधेर नगरी' नाटक के संदर्भ में प्रासंगिक है, क्या उतना ही हमारे जीवन में भी है– पक्ष या विपक्ष में तर्कसहित लिखिए।
9. अगर आपके हाथ में देश की शासन-व्यवस्था सौंप दी जाए तो आपकी प्राथमिकताएँ क्या होंगी– 40-50 शब्दों में लिखिए।
10. 'अंधेर नगरी' नाटक में पाचनवाला अपना चूरन बेचते हुए किन-किन लोगों का व्यंग्य करता है? उन लोगों पर व्यंग्य का असली लक्ष्य क्या है?

उत्तरमाला

बोध-प्रश्न

1. (घ) 2. (ग)

पाठगत प्रश्न

15.1 1. (क) (√), (ख) (X), (ग) (√), (घ) (X), (ङ) (X), 2. (घ)

15.2 (क) (√), (ख) (X), (ग) (√), (घ) (X), (ङ) (X), 2. (घ) 3. (ग)